# स्कूल में प्रणव का पहला दिन

प्रणव की दुनिया

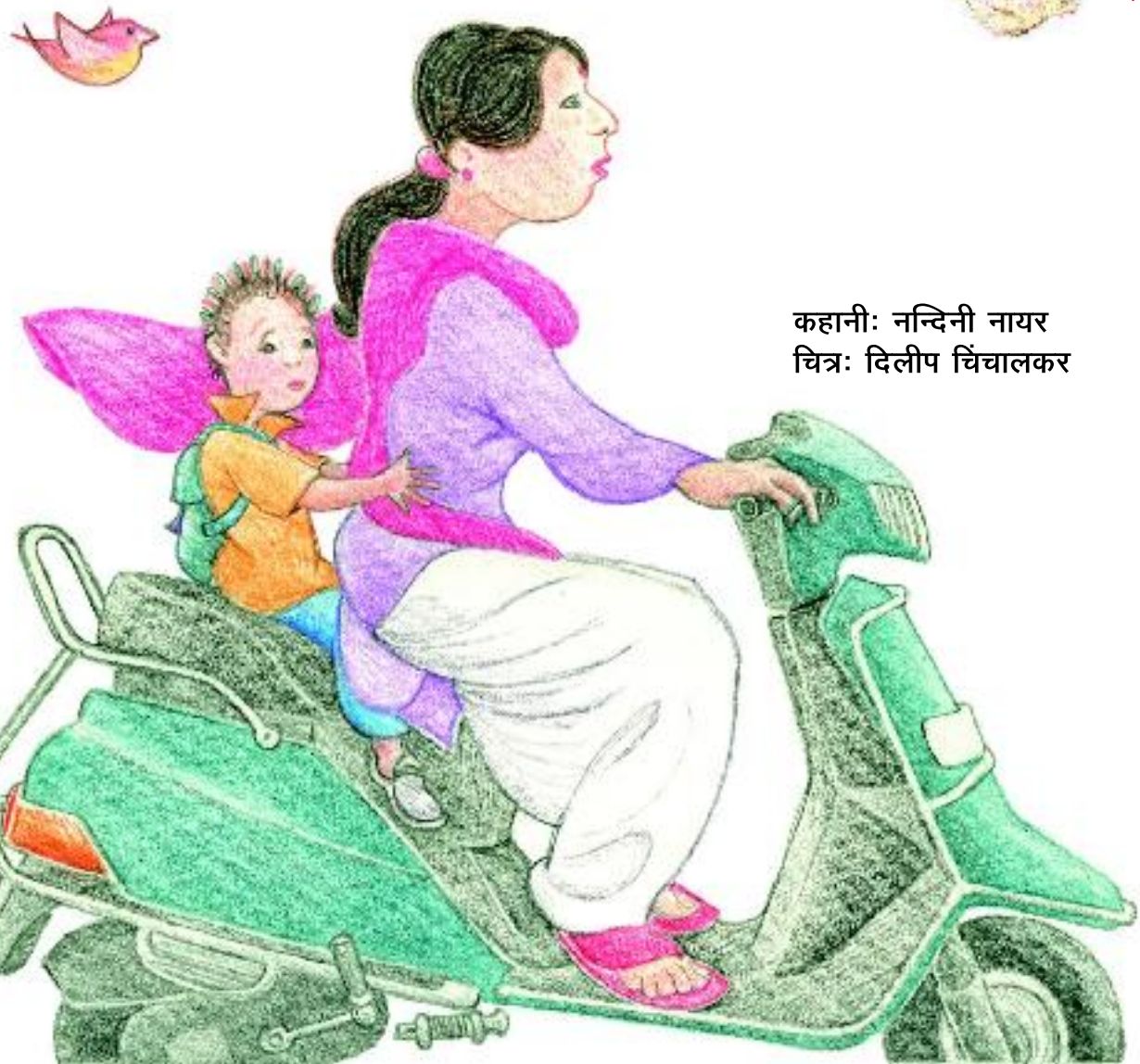



कहानी: नन्दिनी नायर
चित्र: दिलीप चिंचालकर

एकलव्य

तारीख के पापा

# स्कूल में प्रणव का पहला दिन

कहानीः नन्दिनी नायर
चित्रः दिलीप चिंचालकर

एकलव्य का प्रकाशन

# स्कूल में प्रणव का पहला दिन

SCHOOL MEIN PRANAV KA PEHLA DIN

कहानीः नन्दिनी नायर
अँग्रेज़ी से अनुवादः शिवनारायण गौर
चित्रः दिलीप चिंचालकर

© नन्दिनी नायर / सितम्बर 2010 / 5000 प्रतियाँ
ISBN: 978-81-89976-86-6
मूल्यः ₹ 20.00

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है (ISBN: 978-81-89976-87-3 / मूल्यः ₹ 25.00)।

प्रकाशकः एकलव्य

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः (0755) 258 7551

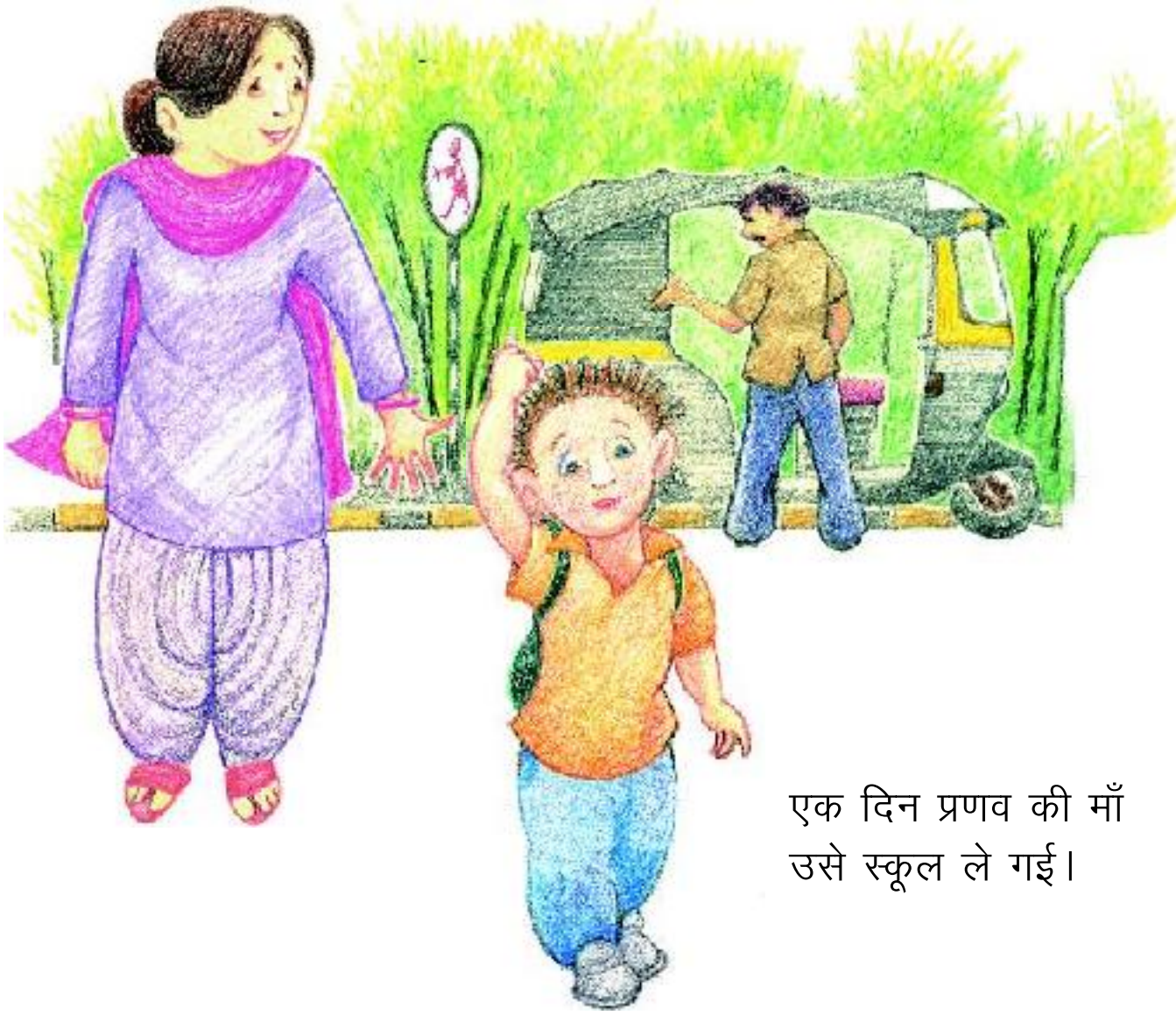

एक दिन प्रणव की माँ
उसे स्कूल ले गई।

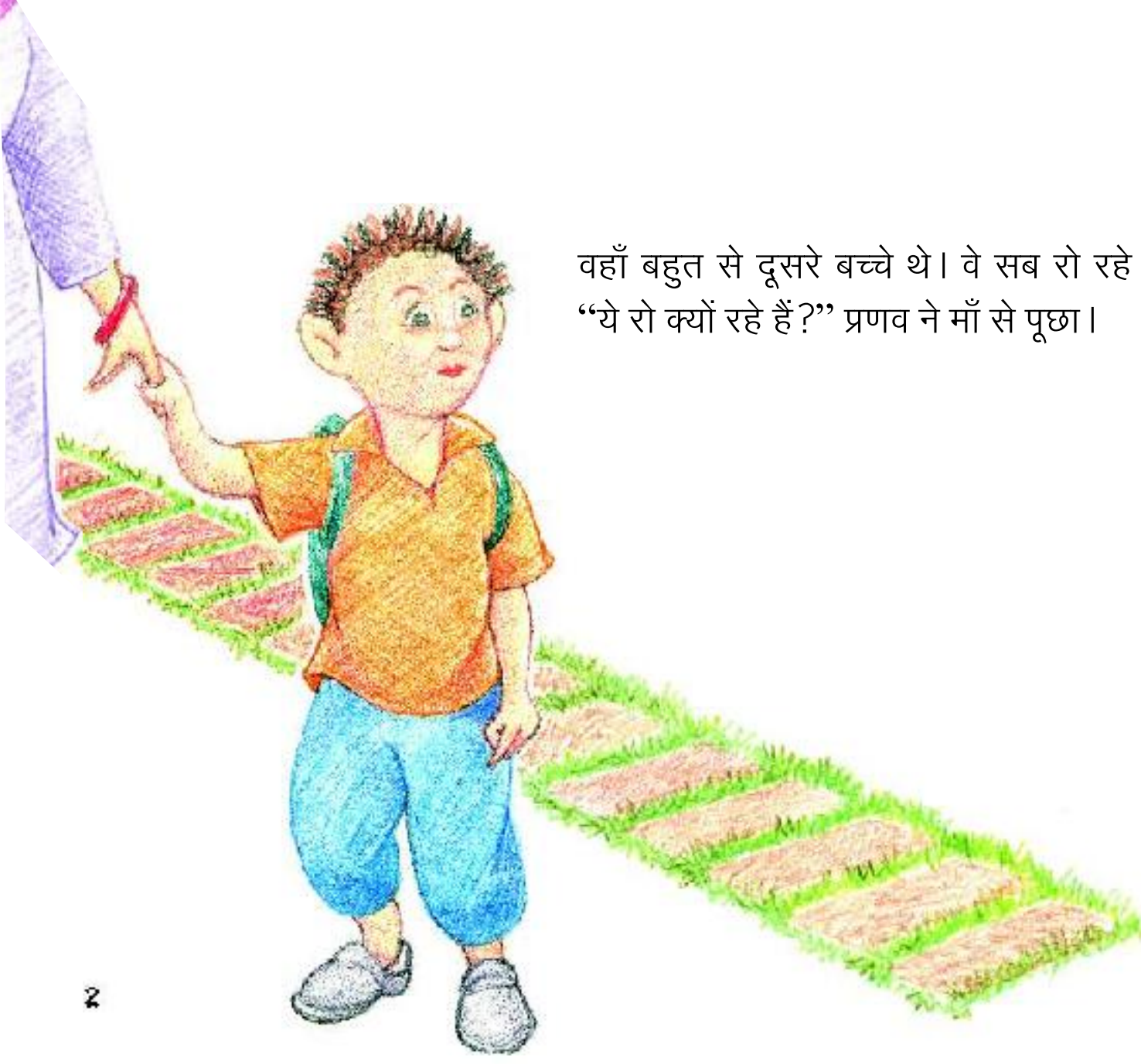

वहाँ बहुत से दूसरे बच्चे थे। वे सब रो रहे थे।
“ये रो क्यों रहे हैं?” प्रणव ने माँ से पूछा।

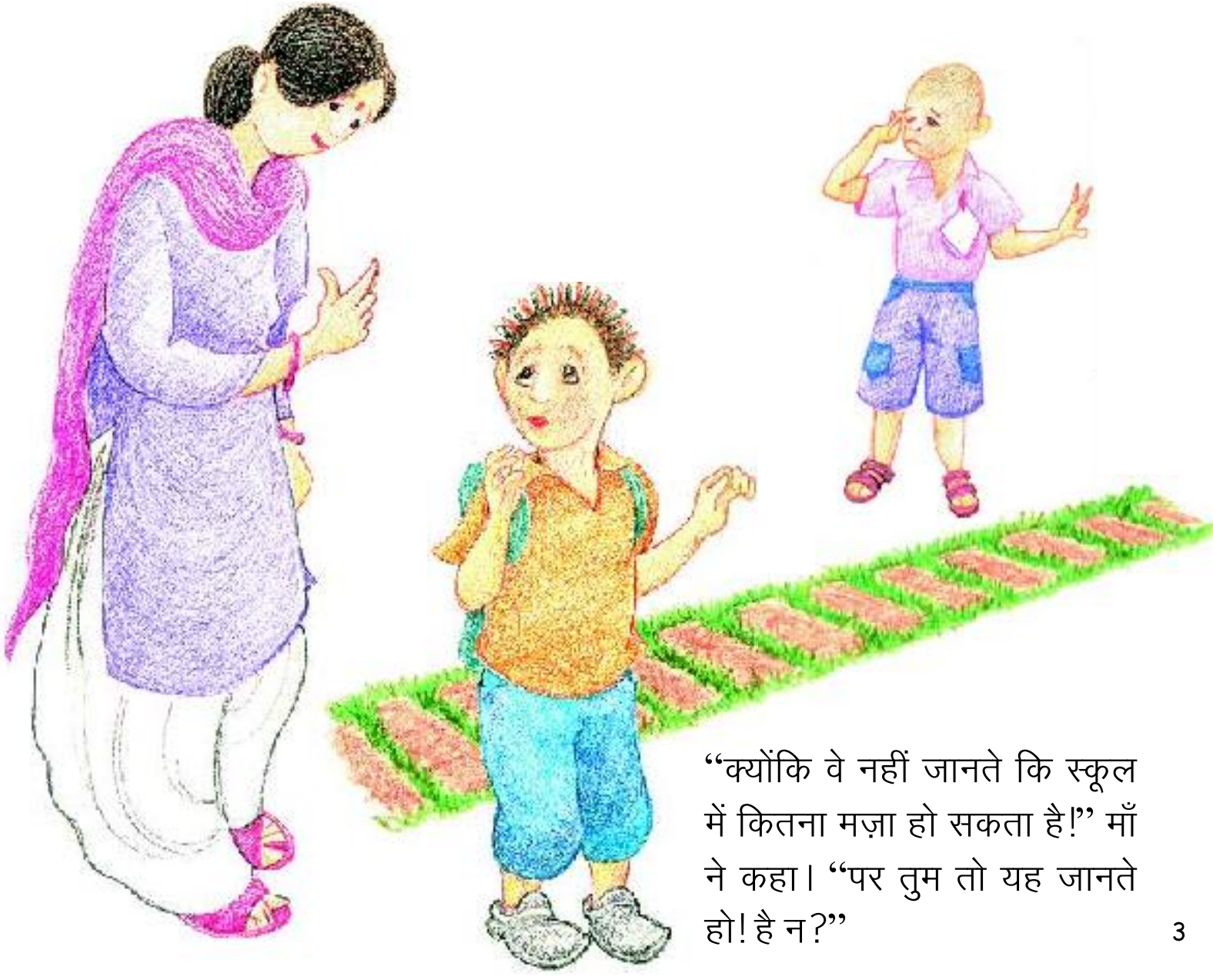

“क्योंकि वे नहीं जानते कि स्कूल में कितना मज़ा हो सकता है!” माँ ने कहा। “पर तुम तो यह जानते हो! है न?”

प्रणव ने हाँ में सिर हिलाया।

माँ ने उसे स्कूल के बारे में सब कुछ बताया था।

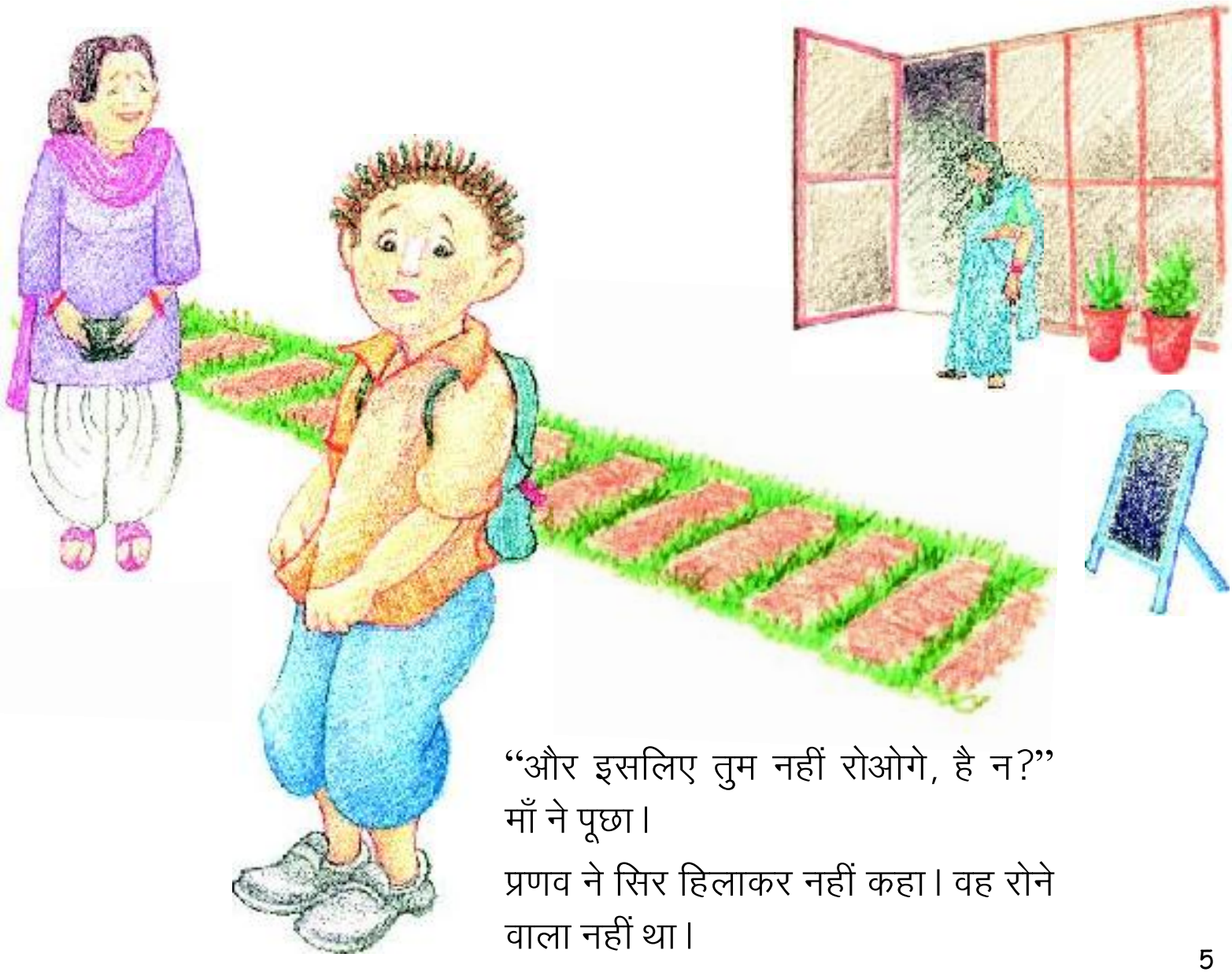

“और इसलिए तुम नहीं रोओगे, है न?” माँ ने पूछा।

प्रणव ने सिर हिलाकर नहीं कहा। वह रोने वाला नहीं था।

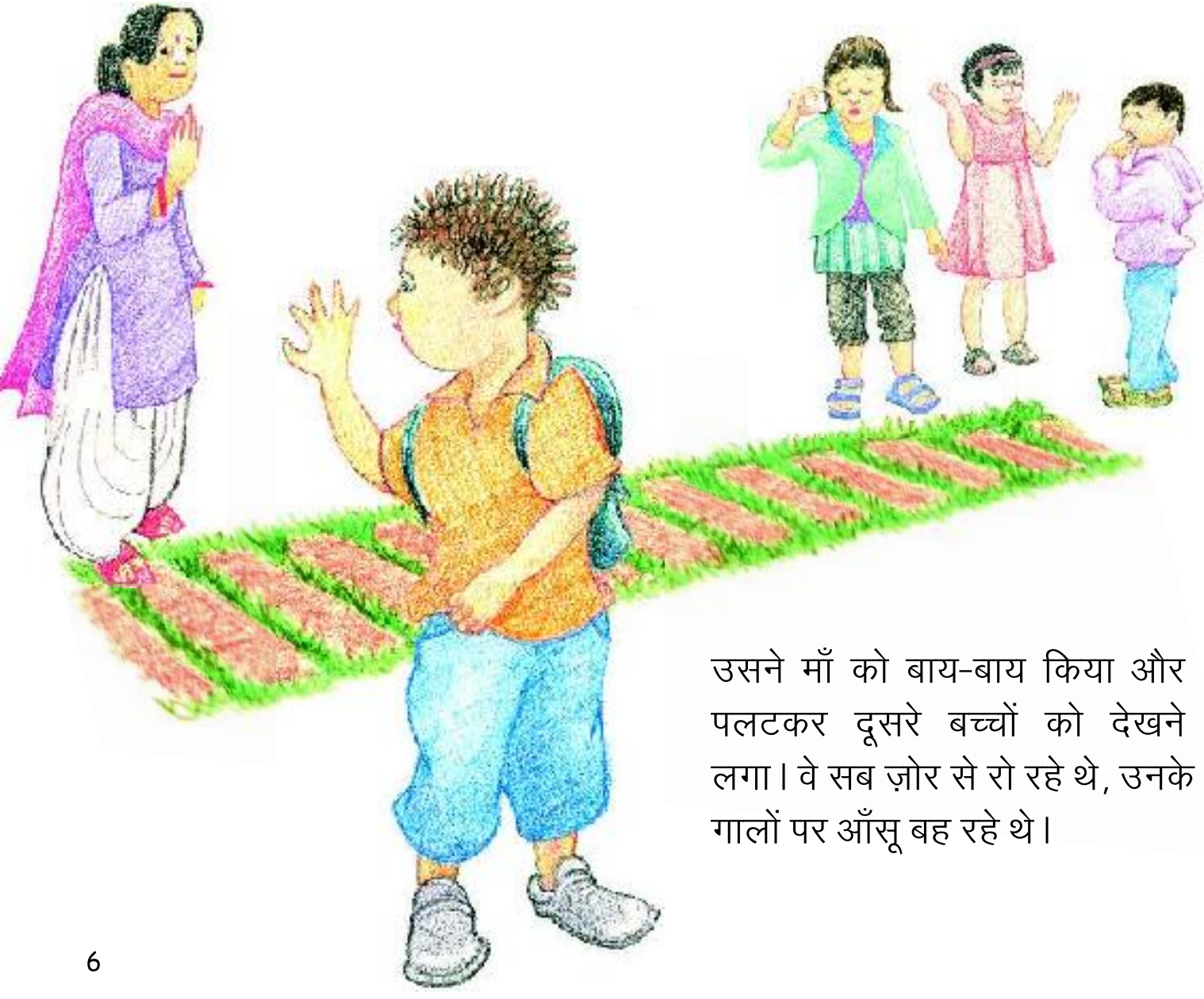

उसने माँ को बाय-बाय किया और पलटकर दूसरे बच्चों को देखने लगा। वे सब ज़ोर से रो रहे थे, उनके गालों पर आँसू बह रहे थे।

प्रणव ने उन्हें कुछ देर देखा। उसे अचरज हुआ कि उनके पास कितने सारे आँसू थे। क्या ये कभी पूरे सूख जाएँगे, उसने सोचा। और इसके बाद वे कैसे रोएँगे?

**प्रणव** बच्चों को रोते हुए देखकर थक गया। उसने नज़र घुमाई और एक बच्चे को देखा जो रो नहीं रहा था।

प्रणव उसके पास गया और मुस्कुराया। वह बच्चा भी मुस्कुराया।
फिर दोनों बैठकर सब रोने वाले बच्चों को देखने लगे!

# Pranav's first day at school

One day Pranav's mother took him to school.

There were lots of other children there. They were all crying.
"Why are they crying?" Pranav asked his mother.

"Because they don't know how much fun school can be!" his mother said.
"But you know that, don't you?"

Pranav nodded. Mother had told him all about school.

"And that is why you won't cry, will you?" mother asked. Pranav shook his head. He was not going to cry.

He waved goodbye to his mother and turned to look at his new classmates. They were all crying loudly, tears streaming down their cheeks.

Pranav watched them for a while. He was surprised that they had so many tears. Would these ever dry up, he wondered. And how would they cry after that?

Pranav got tired of watching them. He looked around and saw a boy who was not crying.

Pranav walked to the boy and smiled at him. The boy smiled back. Then both sat down to look at all the other crying children!

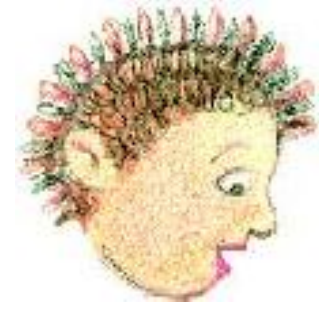

**स्कूल में प्रणव का यह पहला दिन है।**
**वहाँ बहुत से अन्य बच्चे हैं और वे सब रो रहे हैं।**
**पढ़ें और जानें कि आगे क्या होता है...**

**नन्दिनी नायर** *प्रणव स्कूल कैसे गया* की लेखिका हैं। उनकी किताबें *प्रणव की तस्वीर* (2005) और *मैं क्या बनाऊँ?* (2006) तूलिका से प्रकाशित हो चुकी हैं। भारत में प्रकाशित होने के बाद दूसरी किताब के अँग्रेज़ी संस्करण यू.के., यू.एस.ए. और कनाडा में भी प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने कई अन्य कहानियाँ भी लिखी हैं, जो *डिमडिमा*, *सकाळ टाइम्स*, *द हिन्दू*, *टिंकल* और *चिल्ड्रन्स् वर्ल्ड* में प्रकाशित हुई हैं।

**दिलीप चिंचालकर** शिक्षा से बॉयोकेमिस्ट हैं, पर आन्तरिक प्रेरणा से लेखक हैं। वे एक इलस्ट्रेटर व डिज़ाइनर होने के अलावा शिक्षक, चित्रकार, बागबान, ट्रक ड्राइवर और हिचहाइकर भी रहे हैं।

ISBN: 978-81-89976-86-6

एकलव्य

मूल्य: ₹ 20.00

A0129H

parag SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित